भोजपुरी लोकगीतों में संस्कार गीत

डॉ0 रिचा वर्मा*

साधारणतया बोलचाल की भाषा में हम लोक में गाए जाने वाले गीत को 'लोक गीत' कहते हैं। लोक शब्द संस्कृत में 'लोकृ दर्शने' धातु में धञ् प्रत्यय लगाने पर बनता है। इस धातु का अर्थ हुआ देखने वाला अर्थात् लोक शब्द का अर्थ हुआ देखने वाला। ऋग्वेद् में लोक के लिए जन शब्द का भी प्रयोग मिलता है। उपनिषदों में भी अनेक स्थानों में लोक शब्द व्यवहार में आता है।

लोकगीतों में हमें जन–जीवन से जुड़ी समस्त बातों का समावेश सुनने को मिलता है। ये लोकगीत जन मानस के हृदय के उद्गार होते हैं जो कि हमें गीतों के माध्यम से सुनने को मिलते हैं। लोकगीतों के माध्यम से हमें विभिन्न प्रदेशों की संस्कृति, भाषा, रहन–सहन, भोजन, पहनावा इत्यादि की भी जानकारी मिलती है।

हमारा देश भारत विविधताओं का देश है। यहाँ विभिन्न प्रांतों की अपनी अलग–अलग भाषाएँ तथा बोलियाँ हैं। लोकगीत जन मानस के हृदय के उद्गार को व्यक्त करता है। अतः इन भाषाओं तथा बोलियों में लोकगीतों का होना स्वाभाविक है जो कि इन विभिन्न प्रांतों की संस्कृति तथा जीवन शैली को दर्शाता है।

लोकगीतों की अगर हम बात करें तो विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने विचारानुसार इसे विभिन्न प्रकारों में विभाजित किया है परन्तु मुख्य रूप से 6 प्रकार माने गए हैं जो इस प्रकार है :–

1.संस्कार सम्बन्धी गीत :–ये गीत विभिन्न संस्कारों के अवसर पर गाए जाते हैं। जैसे– जन्म, मुंडन, विवाह इत्यादि।

2.रसानुभूति की दृष्टि से सम्बन्धी गीत :–विभिन्न रसों से सम्बन्धित गीत भी भोजपुरी लोकगीतों में गाए जाते हैं। जैसेः शांत, करूण, श्रृंगार इत्यादि।

3.ऋतुओं और व्रतों से सम्बन्धी गीत :–विभिन्न ऋतुओं में गाए जाने वाले गीत जैसे– होरी, कजरी तथा विभिन्न व्रतों में जैसे–छठ, ज्यूतिया इत्यादि के गीत इस श्रेणी में आते हैं।

4.देवता सम्बन्धी गीत :–विभिन्न देवी देवता सम्बन्धी गीत जैसे–हनुमान, दुर्गा, शिव, इत्यादि के गीत इसमें आते हैं।

***Ph.D. Faculty of Performing Arts, Deptt. Vocal Music Banaras Hindu University**

5.विभिन्न जाति सम्बन्धी गीत :–विभिन्न जाति सम्बन्धी गीत जैसे धोबी, अहीर इत्यादि जातियों में गाए जाते हैं। जैसे–बिरहा इत्यादि।

6.श्रम सम्बन्धी गीत :–विभिन्न कार्यों को करते समय थकान को कम करने के उद्देश्य से ऐसे गीतों की रचना हुई होगी। जैसे खेतों में काम करते समय रोपनी, सेहनी इत्यादि गीत श्रम सम्बन्धी गीतों के अन्तर्गत आते हैं।

भारतीय आर्य भाषाओं में हिन्दी का प्रमुख स्थान है। भोजपुरी इसकी एक प्रधान बोली है जिसने अब भाषा का रूप धारण कर लिया है। भोजुपरी बिहार के कुछ भागों में तथा उत्तर प्रदेश के पूर्वी भागों में बोली जाती है। भोजपुरी भाषा में अनेक लोकगीतों की रचना हुई है जो अत्यन्त ही सुमधुर है। भोजपुरी लोकगीतों में सामाजिक जीवन का जितना सजीव, सटीक तथा स्वाभाविक वर्णन प्राप्त होता है उतना अन्य किसी में नहीं। स्त्रियों की दशा का स्वाभाविक चित्रण भी इन गीतों की एक विशेषता मानी जाती है। भोजपुरी समाज में प्रचलित प्रथाओं, वेश–भूषा, खान–पान, रहन–सहन, संस्कार, रीति–रिवाज आदि का वर्णन लोकगीतों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। भोजपुरी लोकगीत सरस एवं हृदय को प्रभावित करने वाले होते हैं।

हमारे जीवन में संस्कारों का अत्यधिक महत्व है। जन्म से लेकर मृत्यु तक होने वाले कृत्य संस्कारों के माध्यम से ही किए जाते हैं। संस्कारों की संख्या विद्वानों ने 16 मानी है। भोजपुरी में भी संस्कार गीतों की अनेक रचनाएँ मिलती हैं। जीवन से जुड़े सारे कृत्य संस्कारों की श्रेणी में आते हैं जिनमें गीतों को गाने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। स्त्रियों के कंठ द्वारा ये संस्कार सम्बन्धी गीत अपनी अलग पहचान छोड़ते है। जन्म के समय सोहर, खेलनवा इत्यादि गीत घर में उल्लासमय वातावरण को बनाए रखने की अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। सोहर सम्बन्धी गीतों में बालक के जन्म सम्बन्धी बातों की चर्चा, माता के स्वास्थ्य, घर में बुआ, दादी क नेग लेने इत्यादि की बातें दर्शायी जाती है।

सबसे महत्वपूर्ण बातें जो संस्कार–गीतों में देखने को मिलती हैं वह है गीतों में भगवान राम, भगवान कृष्ण के जन्म सम्बन्धी गीतों को भी गाने की परम्परा। जन्म लेने वाले बच्चे को भगवान राम–कृष्ण का रूप माना जाता है। यही काराण है कि जन्म सम्बन्धी गीतों में भगवान के जन्म सम्बन्धीबातों का समावेश होता है।

उदाहरण – 1. जन्म सम्बन्धी गीत

'अरे रामा मथुरा में जन्मे मुरारी रईन अँधियारी ए हरी'
भादो अष्टमी तिथि शुभ रहली
देवकी वसुदेव जी से कहली रामा – 2

अरे रामा–2 आपन सपवना विचारी
रइन अँधियारी हरी
अरे रामा ..... ए हरी
नंद बाबा से हाल सुनवले–2
कंस पापी समझना पावले रामा
अरे रामा–2 लीला प्रभु की न्यारी
रइन अँधियारी ए हरी
अरे रामा ..... ए हरी

प्रस्तुत गीत में भगवान कृष्ण के जनम सम्बन्धी बातों का वर्णन किया गया है। इस गीत में हिन्दी भाषा का प्रयोग भी दिखता है।

2. खेलवना
खेले मोरा हो बाबू ढुनमुन अँगनवा
खेलत–खेलत बाबू दादा भीरी गइले–2
चूम लेन्ही हो दादा गोरे बदनवा
जियो मोरा हो बाबू वंश बढ़नवा
खेले .....

इस गीत में परिवार के अन्य सदस्यों का नाम भी जोड़ा जाता हैं जैसे– चाचा, काका, मामा इत्यादि। सोहर की तुलना में खेलवना छोटा होता है। इस प्रकार यह गीत बालक के लिए आर्शीवचन के समान है।

जन्म के अलावा मुंडन, विवाह इत्यादि भी संस्कार है जिनमें भी गीतों को गाने की प्रथा है। विवाह एक ऐसा संस्कार है जो अत्यन्त ही महत्वपूर्ण माना जाता है। विवाह सम्बन्धी अनेक रस्म रिवाजों में गीतों के गाने की परम्परा है जो आज भी सुनने को मिलती है। हर संस्कार के पहले देवी–देवताओं को नमन करने की प्रथा है। एक देवी गीत का उदाहरण –

3. निम्बिया के डार मइया झूलेली झुलुनवा की झुलि–2
मैया गावेली गीतिया की झूली–2

इस प्रकार यह गीत लगभग भोजपुरी प्रदेशों में सभी जगहों पर गाया जाता है।

विवाह सम्बन्धी रस्मों में वर ढूंढने से लेकर विदाई तक के गीत मिलते हैं। विवाह सम्बन्धी रस्मों में वर तथा वधू दोनों पक्षों के गीत गाए जाते हैं। विवाह सम्बन्धी रस्म जैसे–सगुन, हल्दी, तिलक, बारात, परिछावन, मण्डप, कन्यादान, लावा मिलाना, सिंदुरदान, जेवनार, समधी मिलन, विदाई इत्यादि के गीत गाए जाने की परम्परा है। एक हल्दी गीत का उदाहरण इस प्रकार है –

4. केई जे हरदी उपराजेला, निसाम गक
केई बेसाहेला ए
कवन दूलहा के सिरवा, चढ़ावले हरदी
सोहावन ए।

इस प्रकार इस गीत में दुल्हे के सिर पर हल्दी चढ़ाकर इस विधि को सम्पन्न कराने का उल्लेख मिलता है।

5. हल्दी के प्रसंग का एक अन्य उदाहरण–
अगे भाई हरदी हरदिया दूभ पातर ना–2
अगे भाई कौने बाबा हरदी चढ़ावेला ना–2
आगे भाई बाबा से बाबा आपन बाबा ना
आगे भाई उहे बाबा हरदी चढ़ावेला ना

इस गीत में भी परिवार के सभी सदस्यों द्वारा हल्दी लगाने का उल्लेख मिलता है। यह गीत वर तथा वधू दोनों पक्षों में गाया जाता है।

6. चुमावन के गीत का उदाहरण
चूम चूम चूमावेली, अम्मा सुहागिन
चुनावस दे बबुआ, धीरे धीरे।
चूम चूम चूमावेली फुआ सुहागिन
बजावस हो बिछिया धनघोर
चुनावस रे बबुआ, धीरे धीरे

इस प्रकार प्रस्तुत गीत में चुमावन करने वाले परिवार के जनो जैसे– माँ, चाची, भाभी, बहन इत्यादि का नाम जोड़कर गाया जाता है।

इस प्रकार भोजपुरी प्रदेश में सम्पन्न किए जाने वाले संस्कार में सामाजिक तथा पारिवारिक सम्बन्धो के साथ–साथ सम्पन्न किए जाने वाले कार्यों के सम्बन्धित गीत गाए जाते हैं। ये गीत भोजपुरी समाज की जीवन शैली को दर्शाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. लोक साहित्य की भूमिका – कृष्णदेव उपाध्याय, पृ0सं0. 57
2. परम्परागत गीत (भोजपुरी भाषा)
3. परम्परागत गीत (भोजपुरी भाषा)
4. परम्परागत गीत (भोजपुरी भाषा)
5. परम्परागत गीत (भोजपुरी भाषा)
6. परम्परागत गीत (भोजपुरी भाषा)
7. परम्परागत गीत (भोजपुरी भाषा)